उसने कहा था (सारांश)

पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

विद्या सम्पन्न परिवार में उत्पन्न पुरातत्व, इतिहास, दर्शन भाषा विज्ञान, साहित्य आदि में निष्णात एवं हिन्दी, संस्कृत, पालि, प्राकृत अपभ्रंश, बंगला, मराठी आदि भाषाओं के मान्य विद्वान एकांगि चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' कहानी का स्थान हिन्दी कथा सहाहित्य में महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट माना जाता है। इस कहानी के द्वारा कथाकार को अमरत्व की प्राप्ति हुई है इसमें कोई संदेह नहीं। भावात्मक वातावरण की सजीवता, नाटकीयता, शैली शिल्प की प्रौढ़ता आदि के अतिरिक्त 'रोमांस और पैथॉस' के कारण यह कहानी अत्यन्त ही आकर्षक सिद्ध होती है। यों तो गुलेरी जी ने इस कहानी के अतिरिक्त और भी दो कहानियाँ - 'सुखमय जीवन' और 'बुद्धू का काँटा' - लिखी है किन्तु 'उसने कहा था' का स्थान सर्वोपरि है। यह कहानी सरस्वती पत्रिका में निकली थी। यह कहानी सन् १९१५ ई० में लिखी गयी थी। यह तो आश्चर्य ही है कि किसी कहानी के प्रारम्भिक युग में ही ऐसी प्रौढ़ कहानी लिखी गयी है। कहानीकार भावुक बन गया है और काव्यात्मक भावों को कहानी का रूप देकर प्रेम और त्याग का अपूर्व उदाहरण उपस्थित किया गया है। एक आलोचक के शब्दों में - "इस कहानी में प्रेम और त्याग के बीच विश्व युद्ध की विभीषिका का वर्णन है।" इस प्रकार यह कहानी अन्य विशेषताएँ रखते हुए विश्वशांति की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है।

प्रस्तुत कहानी एक प्रेममूलक कहानी है जिसका प्रमुख पात्र लहनासिंह है। वह बचपन की प्रेमिका के प्रेम में, जो बाद में सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी बनती है, अपना प्राण न्योछावर कर देता है। उसके भीतर प्रेम की व्यथा गहरी से गहरी होती जा रही थी। लेकिन वह उसे कभी व्यक्त नहीं करता था। अंत में जब यह व्यथा उसके लिए असह्य हो गयी तब उसने प्राण त्याग दिया। लेकिन लहना सिंह का प्रेम दायित्वहीन प्रेम नहीं है। वह सूबेदार और उसके लड़के बोधा सिंह की प्राण रक्षा के लिए कुछ भी उठा नहीं रखता है। अपनी चिकित्सा उसने जरूरी नहीं समझी क्योंकि अपने दायित्व निर्वाह के बाद वह जीना नहीं चाहता था। प्रेम की वेदी पर उसने अपने को बलिदान कर दिया। गुलेरी जी ने प्रस्तुत कहानी में प्रथम महायुद्ध के एक अद्भुत दृश्य की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हुए मानव जीवन की दिव्य सार्थकता से उन्हें परिचित कराया है। निःसंदेह प्रस्तुत कहानी में गुलेरी जी ने

लहना सिंह की वीरता, सहृदयता तथा अपूर्व सेवा का जो चित्र खींचा है वह अन्यत्र दुर्लभ है। प्रतीत होता है कि लहना सिंह कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक है

कहानी कला की दृष्टि से प्रथम दृश्य की पूर्वभूमि करके कहानीकार ने घटना को संतुलित रखने का प्रयास किया है जो अत्यंत ही चमत्कारपूर्ण है। यह कहानी घटनाप्रधान नहीं बल्कि चरित्रप्रधान है। कहानी के प्रारम्भिक अंश पर प्रकाश डालने के ~~बाद~~ उपरान्त लेखक ने कुछ वर्षों का स्थान रिक्त छोड़ दिया है, किन्तु नायक की मृत्यु के कुछ समय पहले उसकी स्मृति पट पर उसे लाकर उसने अपनी कला को अत्यंत चमत्कृत करने का सफल प्रयत्न किया है। इस प्रकार कहानी की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि बड़ी सबल है। भाषा एवं कहानी की दृष्टि से भी यह कहानी अनूठी है। अंग्रेजी के शब्दों का भी व्यवहार हुआ है और पंजाबी शब्दों का तो कहना ही क्या? कहानी को स्वाभाविक एवं विश्वसनीय बनाने के लिए ऐसा किया गया है। प्रस्तुत कहानी का शीर्षक इतना आकर्षक है कि पाठक दम साधे कहानी पढ़ने के लिए अंत तक अपनी उत्सुकता बनाए रखता है और यही सोचने को वह विवश रहता है कि किसने कहा था, क्या कहा था और क्यों कहा था तथा जब शीर्षक की सार्थकता पर विचार करता है तो मन मुग्ध हो जाता है। प्रारंभ से अंत तक पाठकों की उत्सुकता तथा उसकी कौतूहल वृत्ति बनी रहती है जो कहानी की सजीवता को बनाए रखती है।

प्रेम की पवित्रता, भावों की आकुलता, त्याग की निष्कलुषता तथा मानवता की दिव्य ज्योति से कहानी ज्योतित होती है। मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि जो आधुनिक कहानी की आधारशिला है, बड़ी ही सबल है। पात्र के जीवन का अंतर्द्वन्द्व कहानी में चार चाँद लगा देता है। युद्ध जो बहिर्द्वन्द्व का प्रतीक है, का चित्र बड़ा ही भयंकर प्रतीत होता है किन्तु संवेदना एवं सहृदयता की जो अंतर्धारा प्रवाहित हो रही है वही इस कहानी की अंतः चेतना है। यही प्रस्तुत कहानी के सिद्धि एवं साधन हैं

अतः भाषा, शैली, कथावस्तु, चरित्र चित्रण कथोपकथन एवं उद्देश्य के दृष्टिकोण से प्रस्तुत कहानी 'उसने कहा था' हिन्दी साहित्य की अमर कृति मानी जाती है। ~~प्रेम की~~ पवित्रता भावों की आकुलता, त्याग की निष्कलुषता तथा

मानवता की दिव्य ज्योति है 'उसने कहा था' का लहना सिंह पाठकों पर अमिट छाप छोड़ जाता है। कहानीकार ने और चरित्रों को भी रखा है लेकिन वे सारे चरित्र मूल चरित्र के सहायक हैं। कहानी में वर्णित वार्तालाप तो बड़ा ही चित्ताकर्षक और नाटकीय है। युद्धस्थल की भाषा, गुप्तचर की भाषा, युवक युवतियों की भाषा बंबूकार्ट वाले की भाषा सबकी अपनी सार्थकता है और अपनी उपयोगिता है किन्तु जिस मनोवैज्ञानिक स्थिति का परिचय दिया गया है वह अत्यंत ही मार्मिक है और शैली बड़ी ही उपयुक्त है। जहाँ तक उद्देश्य का प्रश्न है कहानीकार ने बड़े ही सहज और सरल रूप में जीवन और प्रेम के आदर्श को एक सूत्र में नियोजित किया है। उद्देश्य स्पष्ट है, भाषा पात्रानुकूल है, शैली सरल और मार्मिक है और प्रधान नायक का चरित्र तो संदेश प्रेरक है ही।

निःसंदेह कहा जा सकता है कि 'उसने कहा था' हिन्दी की अविस्मरणीय कहानियों में स्मरणीय है।